सं ब्रो॰ वि॰ एफडी/67-87/26796.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मैं॰ दशमेश इन्जीनियरिंग वर्कस 'लाट नं॰ 23, सैंबटर 22, शिव कालोनी, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री पवन कुमार शर्मा, मार्फत श्री अमर सिंह शर्मा, लेवर यूनियन आफिस सामने गवर्नमेंट मिडल रक्ल नं॰ 1, एन आई. टी., फरीदाबाद तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीशोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित श्रीद्योगिक श्रिधकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिश्ट मामला जो किं उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा दिवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है न्याय निर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं।

क्या श्री पवन कुमार की सेवार्ये समाप्त की गई हैं या उसने स्वयं चुकती हिसाव प्राप्त करके नौकरी छोड़ी है? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है?

सं० ग्रो० वि० पानी/20-87/26803--चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) प्रवन्धक, दी हरियाणा स्टेट फेडरेशन ग्राफ कन्जूमर्ज कोप० होलसेल, 1014-15, सैक्टर 22-बी, चण्डीगढ़; (2) मैनजर, दी हरियाणा स्टेट फेडरेशन ग्राफ कन्जूमर्ज कोप० होलसैल स्टोर लि० विश्वनस्वरूप कालोनी, पानीपत, के श्रमिक श्री ग्रमीर सिंह, पुत्र श्री कर्णसिंह मार्फत भारतीय मजदूर संघ, जी. टी. रोड़, पानीपत तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निद्धि करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, ओद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिवितयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा अधिसूचना सं03(44) 84-3श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है —

क्या श्री अमीर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठिक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्रो वि एप.डी/144-87/26811.--चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं साहनी सिल्क मिल्ज प्रा लि 13/7, मथुरा रोड़, फरीदावाद के श्रमिक श्री जोगिन्द्र सिंह, पुत्र श्री कमला सिंह, मार्फत श्री दर्शन सिंह, जनरल सैकेट्री, टैक्सटाईल एप्ड इम्ब्रोडरी यून्यिन (रिजि) एन श्रीई श्रीरत्प परीदाबाद तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उवत श्रधिनियम की धारा 7-क के श्रधीनिटितग श्रीद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के दीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसंगत या संवंत्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में ने हेतु निर्दिष्ट करते हैं।

क्या श्री जोगिन्द्र सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ?यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो० वि०एफडी/141-87/26818.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० पाईनीयर रिफैक्ट्रीज कम्पनी 12/2, मथुरा रोड़, फरीदाबाद के श्रमिक श्री रामचन्द्र, मार्फत फरीदाबाद कामगार यूनियन 2/7, गोपी कालोनी, पुराना फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ,

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा(1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7-क के श्रधीन गठित श्रीद्योगिक श्रिधिकरण हरियाणा फरीदाबाद को नीचे बिनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है श्रथवा विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं।

क्या श्री राम चन्द्र की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं औ वि एफडी 68-87 26825 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं हैन लेह मैंन (इण्डिया) लि , प्लाट नं 10, सैक्टर 6, फरीदाबाद के श्रीमिक श्री ग्राजाद सिंह, पुत्र श्री चिमन लाल मार्फत हेन लैन मैन इम्पलाईज यूनियन जी— 162, इन्द्रा नगर, फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं?

इसलिये, ग्रब, श्रीशोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रिधिनियम की घारा 7—क के श्रिधीन गठित श्रीशोगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमकों के बीच याती विवाद-ग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुनगत या संबंधित मामला है न्यायनिर्गय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं।

क्या श्री आजाद सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्रो वि वि (एफडी/गुड़गांव/57-87/26832 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं वसकीपर स्टीलज 1-डी/43 एन श्राई व्हे के फरीदाबाद के श्रमिक श्री हरपाल सिंह, पुत्र श्री तुला राम बी-II कपड़ा कालोनी फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायिनिर्मय हेतु निर्देश्य करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7-क के श्रिधीन गठित श्रीद्योगिक श्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है श्रिथवा विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं।

क्या श्री हरपाल सिंह की सेवा समाप्ति न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० स्रो० वि०/कुरू/16-87/26839.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन स्रायुक्त हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) जनरल मैनेजर, हरियाणा राज्य परिवहन, कैयल के श्रीमक श्री जसमेर सिंह, पुत्र श्री रूलिया राम, गांव रायपुर रोरान, तहसील व जिला करनाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई सौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के रारज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44) र84-3, श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उस से संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री जसमेर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ?यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

श्रार० एस० श्रग्नवाल, उप सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।